रात्रि क्लास 26/11/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

इस समय रूहानी बच्चे लड़ाई के मैदान पर हैं। मनुष्यों को संकल्प-विकल्प होते ही हैं। इस समय कोई संकल्प-विकल्प आते हैं तो कहते हैं ज्ञान में न होनी चाहिए। बाप समझाते हैं ज्ञान में ही लड़ाई चलती है। अज्ञान में तो कर्म-इन्द्रियों पर जापता(जीतना) न था। अभी बाप ने मना की है कर्म-इन्द्रियों से पाप न करना है। संकल्प-विकल्प आवेंगे; परन्तु कर्मणा में न आना है। न चाहते हुए भी विकल्प आवेंगे, तब तो युद्ध कहेंगे। माया बहुत तूफान में लाती है। इनसे विकर्म करावें, यह कर्मातीत न बनें तो मूँझना न है। कर्म-इन्द्रियों से न करना है। तूफान भी अभी कहा जाता। आगे तूफान नहीं कहते थे। बाप ने समझाया है बीमारी बाहर निकलेगी। जास्ती विकल्प आवेंगे। तूफान आने दो। कर्म-इन्द्रियों से न करना है, यह सम्भाल रखनी है। विकार में जाते हैं तो बहुत पछतावा करते हैं। यह गफलत है। आगे ऐसे नहीं समझते थे कि यह भूल है। भूल अभी समझते हो। बीमारी आती है। देहअभिमान में आना भी विकार हो गया। मनुष्य समझते हैं यह तो प्रकृति का धर्म है। होना ही है। बाप कहते हैं अभी नहीं होना चाहिए। विकारों में जाने का मना बाप ही करते हैं। तो माया भी सामना करती है। न चाहते हुए भी तूफान जास्ती आवेगी। शिवबाबा पास आते हैं, भाकी पहनते हैं। यह हुई ऊँच ते ऊँच की भाकी। फिर और कोई की भाकी पहन नहीं सकते। इन बातों में थोड़ा समझना होता है। हाँ, किसको राज़ी करने लिए, झगड़ा मिटाने लिए पहन ले। वह विकार में जाना तो नहीं हुआ ना। हो बाप की याद में; परन्तु उनका हठ मिटाने लिए साक्षी हो किया जाता है। यह युक्तियाँ अभी समझाई जाती हैं। अभी तुम युद्ध के मैदान में हो। तो बाप खबरदार करते हैं। जहाँ झगड़ा आदि न है तो भाई-2 हो रहना है। हम बाप से वर्सा ले रहे हैं। उसी मौज में रहना है। बाप के बन गये ना फिर जिस्मानी हलचल न हो, नहीं तो कशिश होगी। ऐसी अवस्था इस समय कोई की है नहीं। अभी हो जाये तो कर्मातीत अवस्था कही जाये। इसलिए कुछ न कुछ क्रिमिनल आई चलती रहेगी। कोई की थोड़ी, कोई की बहुत। इसलिए हनुमान का मिसाल है। कितना भी 5 विकारों का तूफान आये, हिला न सके। पिछाड़ी की बात है। लंका को आग लग रही थी। विनाश हो रहा था। महावीरों की अडोल अवस्था उ(इ)स समय रहती है। उन्होंने फिर हनुमान आदि की बातें बैठ बनाई हैं। कोई-2 बाप को बताते हैं, कोई नहीं बताते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो। फिर पूछ सकते हो इनको क्या कहें; क्योंकि माया बुद्धियोग तोड़ देती है ना। चार्ट भी बड़ा समझ से लिखना होता है। बिलवेड बाप को हमने क्लीयर याद किया? भल जानते हैं हम शिवबाबा के बच्चे हैं, तब यहाँ बैठे हैं। बाप को अपना बनाया है। वारिस तो बन जाते हो, बाकी ऊँच पद पाने लिए यह सभी खबरदारी रखनी है और फिर सर्विस भी करनी है। बहुतों का कल्याण करने से इकट्ठा हो जाता है। दूसरों का कल्याण करने से अपने को भी कायदे अनुसार मदद मिलती है। अपना पोतामेल निकालना अच्छा है। बाबा ने देखा है कैसे धंधे में पोतामेल रखते है। रोज़ का भी निकालते हैं, आज इतना खर्चा, इतना फायदा हुआ। तुम्हारा है नाजुक कारोबार। सुस्ती छोड़ इनका पोतामेल रखें तो बहुत फायदा हो सकता है। बाबा का देखा हुआ है। सारी जीवन कहानी बैठ लिखते हैं। वॉल्यूम्स बन जाते हैं। कहता था– हम अच्छा काम करता हूँ; परन्तु था तो विकारी ना। भक्त लोग विकार को खराब नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं आधा कल्प तो तुम अपवित्र(पवित्र) रहते हो फिर आधा कल्प रावण राज्य में तुमको अपवित्र होना ही है। बच्चे रात को जागते हैं तो भी आपस में राय कर याद में रहें। हाँ, माया विघ्न डालेगी। बुद्धि को कहाँ-2 ले जावेगी। पुरु॰ करना है हम बाबा को याद करते हैं। उनकी याद से ही बेड़ा पार हो(ना) है। एवर वेल्दी भी बनेंगे। घड़ी-2 एक/दो को सावधान करते उन्नति को पाते रहें। पक्के हो जावेंगे तब अन्त में विजय होगी। बाबा को बतला सकते हैं बाबा हमारा यह चार्ट है, तो फिर हिर जावेंगे। हेर पड़ जाने से चार्ट अच्छा रहेगा। कमाई अथाह है! लड़ाई भी बहुत कड़ी है बाप को याद करने की। वह बाप को याद करते, माया अपने तरफ कशिश करती है। इस पर नाटक भी है; परन्तु अर्थ नहीं समझते थे, यह क्या होता है। अभी समझ आई है। मूल बात है ही, बाप को याद करना है, 84 के चक्र को याद करना है और खुशी में रहना है, जिसका गायन है अतिइन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। अच्छा, गुडनाइट और नमस्ते।